contents : महिलाओं का ऐतिहासीक उत्थान।
(सूची)
2. महिलाओं का विश्व में विभिन्न परिस्थितीयों में भागीदारि।
3. महिलाओं की भागीदारि हमारे भारतवर्ष में।
4. विश्व एवं भारत में महिलाओं की वर्तमान स्थिती।

1. महिलाओं का ऐतिहासीक उत्थान या प्राचीन काल में स्त्रियों की दशा स्थिती पर निबंध।

प्राचीन काल में स्त्रियों की परिस्थीती कि बात करें तो प्राचीन काल को तीन भागों में विभाजीत किया जाता है। 1. प्रागैतिहासीक, वैदिक काल, उत्तर वैदिक काल। हम यहाँ महिलाओं की विभिन्न स्थितीयों में अनेक सामाजिक दायित्वों की बात करेंगें।

1. प्रागैतिहासीक काल में स्त्रियों की परिस्थीती की बात करें तो इसमें कुछ खास संदर्भ नही मिलता क्योंकी वह काल विकास के शुरुआती चरण को दर्शाती है। क्योंकि उस समय मनुष्य अपने आप इतना बौद्धिक स्तर पर सशक्त नही हुआ था। परन्तु यहीं प्रागैतिहासीक काल की समय जैसे-जैसे आगे बढ़ने लगी, फिर अनेक सभ्यताओं का विकास हुआ, सभ्यताओं के विकास के बाद पठन-पाठन का विकास हुआ जिसे हम वैदिक काल में विभाजीत करते हैं। जिसे ऋग्वैदिक काल और उत्तर वैदिक काल के नाम से जानतें हैं, इन्ही की महता इनमें सबसे ज्यादा है।

ऋग्वैदिक काल की बात करें तो, पहलें kinship (नातेदारी) कि बात आती है, जो की वैवाहिक परम्परा को दर्शाती है। अतः फलस्वरुप, ऋग्वैदिक काल में समाज को आगे बढ़ाने के लिए अंतरजातीय विवाह प्रचलित थें। ऋग्वेद में ब्राह्मण विमद तथा कुमुदु के विवाह का उदाहरण मिलता है।

एकपत्नीकता : ऋग्वैदिक युग में साधारणतया एक